Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 2, Feb- 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 01/02/2021 Accepted on : 14/02/2021 Publication Date: 15/02/2021

मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह के काव्य में रूढ़ि और परंपरा

गौरव वर्मा
शोधार्थी- पी-एच.डी., हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
Email – gourav.guru.verma@gmail.com

सारांश; हिंदी और पंजाबी के साहित्य कोष में हमें मध्यकालीन साहित्य परंपरा में इस्लामिक रहस्यवाद को व्यक्त करता हुआ सूफी या प्रेमाख्यानक काव्य प्राप्त होता है। हिंदी में मौलाना दाऊद या मुल्ला दाऊद ने चांदायन नामक महाकाव्य की रचना मसनवी शैली में की जो सूफी रहस्यवाद से प्रभावित काव्य है, और बुल्ले शाह ने पंजाबी में काफियां, सिहरफियां, बारामाहा, दोहे आदि काव्य की रचना की है। प्रस्तुत शोध आलेख में बुल्ले शाह और मौलाना दाऊद के काव्य में चित्रित रूढ़ि और परंपराओं का अध्ययन किया गया है। मौलाना दाऊद ने अपने काव्य में भारतीय हिंदू समाज में प्रचलित रूढ़ि और परंपराओं का चित्रण किया है और पंजाबी कवि बुल्ले शाह ने पंजाबी क्षेत्र में प्रचलित हिंदू और मुस्लिम समाज की रूढ़ि और परंपराओं का चित्रण अपने काव्य में किया है।

मूल शब्द :मौलाना दाऊद, मुल्ला दाऊद, बुल्ले शाह, हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, हिंदी सूफी काव्य, पंजाबी सूफी काव्य, संत बुल्ले शाह, सूफी साहित्य, रूढ़ि, परंपरा, रहस्यवाद, मध्यकालीन साहित्य, चांदायन, बुल्ले शाह की काफियां।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध आलेख में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। पुस्तकालय अध्ययन करते हुये समाज और संस्कृति का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। तुलनात्मक अध्ययन के प्रयोग से दो भिन्न कालखण्डों और काव्य भाषा की साहित्यिक परंपराओं का अध्ययन किया गया है।

भिन्नभिन्न समाजों में विभिन्न क्रिया कलाप होते हैं जिनके पीछे ऐतिहासिक-, सामाजिक, मिथकीय कारण होते हैं। ये क्रिया कलाप परिवर्तित होते रहते हैं समाज की मांग पर ये रीतिरिवाज रूढ़ि बनकर ध्वस्त होते हैं हर समाज की अपनी मान्यताएँ और -संस्कार होते हैं जो एक समय में रूढ़ हो कर समाज को अमान्य हो जाते हैं। समाज ही अपनी सहूलियत के लिए परम्पराओं की शुरुआत करता है, और समय के साथ रूढ़ि बन जाने पर समाज ही उसे ध्वस्त कर देता है। परंपरा और रूढ़ि को लेकर श्यामचरण दूबे जी का कथन सराहनीय है –

"परंपरा संस्कृति का वह भाग है जिसमें भूतकाल से वर्तमान और वर्तमान से भविष्य तक एक निरंतरता बनी रहती है। यह जरूरी नहीं है कि परंपरा जीवन के क्षेत्र में समान रूप से प्रभावी हो। धार्मिक विश्वासों और रूढ़ियों की परम्पराओं में परिवर्तन धीमी गति से होते हैं, सामाजिक संस्थाओं और व्यवहारों की परम्पराओं के कुछ पक्षों में, धर्म की तुलना में, बदलाव की गति अधिक तेज हो सकती है, यद्यपि यह भी मंद गति का क्षेत्र है।"[1]"

स्पष्ट है कि श्यामाचरण दुबे ने परंपरा और रूढ़ि का मूल्यांकन करते हुए परंपरा की निरंतरता पर बल दिया है साथ ही दुबे जी ने परंपरा में परिवर्तन की बात भी की है, मुख्य रूप से धार्मिक विश्वासों और रूढ़ियों के परिवर्तन की बात की है। दरअसल रूढ़ि और अंधविश्वास परंपरा के वे अंग हैं जिनमें परिवर्तन, समय की मांग हो जाती है। हर युग में चेतना के मानदंड बदलते हैं, नए ज्ञान विज्ञानों से प्राचीन कार्य-कलापों में परिवर्तन कि मांग होती है, ये रीति-रिवाज और संस्कार रूढ़ि बनकर टूट जाते हैं। दुबे जी ने 'व्यावहारिक, सामाजिक और धार्मिक' परम्पराओं के तीन प्रकारों का भी संकेत दिया है

चांदायन में मौलाना दाऊद ने भारतीय हिंदू समाज की विभिन्न परम्पराओं का वर्णन किया है, अब ये किसी मायने में रूढ़ि को भी आत्मसात किए हुए हैं। परंपरा और रूढ़ि में केवल समय का अंतर होता है, किसी समाज की परंपरा किसी समय में रूढ़ि बन जाती हैं और उनमें परिवर्तन होने लगतें हैं श्यामाचरण दुबे के अनुसार यह परिवर्तन धीमी गति से होता है। मौलाना दाऊद ने अपने काव्य में भारतीय लोकमान्यताओं से जुड़ी परंपरा एवं रूढ़ियों का चित्रण किया है। यह शास्त्र विदित न होकर भारतीय जनमानस से सीधे जुड़ी है। इस संबंध में ज्ञाचन्द्र शर्मा ने लिखा है

[1] **दुबे ,श्यामाचरण.** ***समय और संस्कृति*** **.पृ॰14**

"चंदायन के समाज में धर्म के लोक-मान्य रूप की ही अभिव्यक्ति अधिक है। अतः उसमें शस्त्र-विहीत संस्कारों को कोई विशेष स्थान नहीं मिला, न ही दाऊद ने इन्हे इस रूप में प्रस्तुत ही किया है।" [2]"

चांदायन में वर्णित परंपराए भारतीय समाज की लोकमान्यताओं पर आधारित हैं और उसी प्रकार की रूढ़ियों को भी काव्य में स्थान मिला है। विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक परंपरा के रूप में चांदायन में वर्णित है, साथ ही इस परंपरा में रूढ़ हो गई दहेज परंपरा का भी वर्णन मौलाना दाऊद के काव्य में मिलता है। भले ही उपहार के रूप में एक राजा अपनी बेटी के विवाह में दहेज प्रथा का पालन कर रहा है, परंतु आज के विमर्शात्मक समाज में यह एक रूढ़ि मात्र बन गई है –

गांउ तीस भल दइजे पाए। भैंस साठि एक दरबि भराए।"
घोर पचास आनि किए ठाढ़े। टंका लाखु लखु अहहिं ते बांधे।[3] "42

भले ही चांदायन के समय में इतना दहेज देना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक रहा है, परंतु उत्तरआधुनिक समय में विभिन्न - विमर्शों के चलते यह रूढ़ि बन गई है। समय में परिवर्तन के फलस्वरूप समाज के मानदंड बदल रहे हैं। चांदायन में विवाह संबंधी संबंधी परंपरा में बाल विवाह की रूढ़ि भी मिलती है। भले ही आज के समय में समाज जागरूकता के चलते बालविवाह को - सामाजिक रूढ़ि के रूप में देखता हो पर चांदायन में शायद समय की मांग यही रही होगी।

चउथे बरिसि धरिसि जउ पाऊ। जइत बोलावा बांभन नाऊ।"
दिंही सुपारी मोतिन्ह हारू। कहीहु महर सों मोर जुहारू।[4] "35

चांदायन की वैवाहिक परंपरा में छोटीछोटी विभिन्न परम्पराएँ जुड़ी हुई हैं। चौथे वर्ष में लगते ही महर सहदेव को पुत्री के - -नाइ की जोड़ी भेजना भी हिंदू वैवाहिक कर्मकांड का एक हिस्सा ही है। रही बात बाल-विवाह की चिंता लगती है और ब्राह्मण विवाह की तो यह राजनैतिक सामाजिक दबाव के कारण हुआ लगता है। मौलाना दाऊद ने चांदायन में राजा रूपचन्द द्वारा गोवर पर आक्रमण करवा कर सिद्ध कर दिया कि पुत्री पिता के घर सुरक्षित नहीं है, शायद यही कारण रहा होगा कि बालविवाह की - आवश्यकता समाज को महसूस हुई।

चांदायन काल से परे होकर एक ऐसी परंपरा के दर्शन करवाता है, जो भारतीय समाज के लिए अपवाद हो सकती है। कन्या के जन्म पर उत्सव भला कौन सा भारत बनाता है, शायद यह सच बस राजमहलों तक सीमित हो –

"'पांचाउ' दिवसु छठी भई राती। 'नेउता' गोवर 'छतीसउ' जाती।
घर घर 'कह कर टेका' आवा। 'अउ' तेही 'पाढे(पाछे)' 'बाज बधावा'।[5] "33

परम्पराओं के दर्शन होते हैं-छोटी रूढ़ि-जन्मोत्सव की परंपरा के साथ अन्य कई छोटी, जैसे राशि फल और नक्षत्र बखान करना, भविष्यवाणी करना, मुख्य रूप से सुहागिनों को ही एकत्रित करना आदि रूढ़ि परम्पराएँ भी दिखाई देती है।-

चांदायन में वर्णितत्योहार भारतीय मूल के हिंदू घरों में मनाए जाने वाले पर्वोत्सव हैं। इन पर्वों की परंपरा हमारी मिथकीय चेतना से अग्रसित हुई है। विभिन्न पर्वों पर चलती आ रही परम्पराएँ जैसे दिये जलाना, डंडाहार रचना, गीत गाकर नाचना , पकवान बनाना आदि परम्पराएँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए चांदायन में वर्णित होली का दृश्य रोचक है –

फागुनि सिऊ"'चउग्गुन' कहा। 'उछर पवन सतगुन' होइ रहा।
फाग 'सराहऊं लोरु जउ आवइ'। 'सिउ मरति गिय लाइ जियावइ'।
घरी घरि रचहिं 'डंडाहार' बारीं। आति सुहाग बहु राज दुलारीं।
मुख 'तंबोलु' चखि काजर 'पूरहीं'। 'आंकि मांग सिरि चीरि सेंदुरहिं'।
'नाचहीं फाग होइ' झनकारा। 'तेहिं रस भीनीं सबइ सयंसारा'।
रगत 'रोइ मइं' तस 'कइ' 'चोल चीर' रतनार।
कही सुरिजन तोरि मैना 'भाइ होरी जरि' छार।।[6] "350

---

[2] शर्मा ,ज्ञान चन्द्र.. *चंदायन का सांस्कृतिक परिवेश.* पृ॰71.

[3] गुप्त ,माताप्रसाद. *चांदायन* .पृ॰40.

[4] गुप्त ,माताप्रसाद. *चांदायन* .पृ॰33.

[5] गुप्त ,माताप्रसाद. *चांदायन* .पृ॰31.

[6] गुप्त,माताप्रसाद. *चांदायन* .पृ॰40.

मैना सुरजन वैश्य ब्राह्मण द्वारा लोरिक को संदेश भेजते समय अपनी दयनीय दशा का वर्णन करते हुए, होलीदीपावली की - कि किस प्रकार पितृपक्ष लगने पर हमारे समाज में देवोत्थान की परंपरा है ।

रूढ़ि और परंपरा में केवलसामाजिक मानसिकता का फर्क है, एक नकारात्मक अवधारणा है दूसरी सकारात्मक । भला त्योहार जो समाज में रोचक और खूबसूरत वातावरण उत्पादित करता है क्या रूढ़ि हो सकता है ? यह प्रश्न विचारणीय है । दीपावली राम की रावण पर और अच्छाई की बुराई पर जीत का पर्व है, यही मिथकीय कथा इससे जुड़ी हुई है, परंतु यदि इसमें कुछ नकारात्मक रूढ कार्य होते तो यह भी रूढ़ि हो जाता, उदाहरण के लिए किसी सीमित वर्ग के लिए या व्यवस्था के लिए इसमें परिवर्तन हो जाते, जुआँ खेला जाना जैसी रूढ़ि इससे जुड़ी है ।

चांदायन में विभिन्न परम्पराओं और रूढ़ियों के दर्शन होते हैं, इनमें से कुछ धर्म, कुछ सामाजिक और कुछ व्यवहारिक मान्यताओं से जुड़े हुए हैं । दुबे जी का मानना है कि धार्मिक परंपरा और रूढ़ियों में परिवर्तन धीमी गति से होता है, तेज गति से परिवर्तित होने वाली सामाजिक परम्पराएँ और रूढ़ियों के परिवर्तन के पीछे वर्ग चेतना और संघर्ष होता है, जबकि व्यावहारिक परम्पराओं और रूढ़ियों के खंडन मंडन में प्रचालन मात्र कार्य करता है । व्यावहारिक परम्पराओं और रूढ़ियों के साक्ष्य चांदायन में जहां तहां बिखरे पड़े हैं ।-

बिसवां पंडित जाई जगावा । पाटा पानि बीर कह आवा ।“
पाट बइसारि दीन्ह आसीसा । चंद्र भायं सुरिज मुख दीसा ।[7] ”278

भारतीय मध्यकालीन समाज के चलते समाज का आदर्श और औपचारिकता पूर्ण व्यवहार चांदायन में अभिव्यक्त हुआ है । इतना ही नहीं यहाँ ऐसी व्यावहारिक परम्पराओं के भी दर्शन होते हैं जो समय के विपरीत है, या हो सकता हो की यह उस समय कि मांग थी क्युंकि अब एक ग्वाला वीर बन चुका है और ब्राह्मण वैश्य ।

चांदायन की कथा में जब चन्दा को भगा ले जाने के लिए, लोरिक सलाह के लिए ब्राह्मण के पास आता है तो उसके हाथपैर - अभी भी लोरिक पर है । जब लोरिक के घर हरदी पाटन में वैश्य ब्राह्मण आता है तब उसे पानी नहीं दिया जाता जिससे वह हाथ-पैर धो ले । हो सकता है दाऊद को उस समय वर्णन करना ध्यान न रहा हो, परंतु यदि ऐसा नहीं हैं तो जातिगत रूढ़ि इसका कारण हो सकती है ।

चांदायन में लोकप्रचलित प्रथाओं के साथ ऐसी धार्मिक परम्पराएँ भी मिलती हैं जिनका कोई मिथकीय परिवेश नहीं है, वे किसी मिथकीय कथा से नहीं जुड़ी, ये प्रथाएँ पूर्णतः मोलिक और लौकिक हैं, जैसे सोमनाथ पूजा ।

असाढ़ असाढ़ी कई तिथि अही । दुज गिनि देव जातरा कही ।“
सोम बारू स महतु गुनि कहा । सो दिन आगें आवतु अहा ।
होम जाप अगियारि करावही । परसि देव कर जोरि मनावही ।
जउ धरि मांथ देव पां लावइ । सो जसि चांद सुरिजु बरु पावइ ।[8] ”244

यह सोमनाथ पूजा पंडित द्वारा गढ़ा गया कर्मकांड है, जो चांदायन में वर्णित हुआ है । वैसे हिंदू धर्म में शिवपार्वती की - व्रत परिवार की पूर्णता और दंपति जीवन की प्राप्ति के लिए किया जाता है । यहाँ भी ब्राह्मण ने इस व्रत और पूजा का महत्व -पूजा यही बखाना है । इस संबंध में ज्ञान चंद्र शर्मा ने भी अपनीपुस्तक में लिखा है –

“सोमनाथ पूजा का कोई स्वतंत्र पर्व नहीं होता । तथापि`चंदायन में इसका उल्लेख एक उत्सव के रूप में हुआ है..... लोक में शिव पार्वती की मान्यता गृहस्थ के देवता के रूप में भी है हिंदू स्त्रियाँ दांपत्य- सुख और पति-पुत्रादि की मंगल कामना से शिव की पूजा, व्रत-अनुष्ठान करती हैं ।[9]

बुल्ले शाह समय के उस मुहाने पर खड़े थे जहां परंपरा पूर्ण रूप से रूढ़ि में तब्दील होती जा रही थी । विभिन्न धर्मों के अंतर्विरोधों के चलते समाज में एक पुनर्जागरण की शुरुआत हुई । कई विभिन्न संस्कृतियाँ टकरा रही थी, जिससे किसी की सामाजिक परंपरा और रूढ़ि थाह नहीं पा रही थी, समाज कई मान्यताओं से दूषित था, या ये कहना सही होगा की समाज में वर्ग

[7] गुप्त,माताप्रसाद. *चांदायन* .पृ॰270.

[8] गुप्त ,माताप्रसाद. *चांदायन* .पृ॰337.

[9] शर्मा, ज्ञान चन्द्र. *चंदायन का सांस्कृतिक परिवेश.* पृ॰77.

संघर्ष और वर्ग चेतना जन्म ले रहा था। हर परंपरा का मूलयांकन नवसमाज अपने ढंग से कर रहा था और रूढ़ि का खंडन कर रहा था। इस समाज के संबंध में रविकुमार का कथन उल्लेखनीय है।

"इस काल में सामाजिक तथा धार्मिक परिवेश में पूर्व मध्यकालीन स्थितियों की तुलना में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया था। जातिभेद-, वर्गभेद-, निम्न वर्ग का शोषण, विलासिता की भावना, स्त्री का अपमान, बहुविवाह प्रथा-, पर्दा प्रथा, स्पृश्य-अस्पृश्यता, धार्मिक भेदभाव-, धार्मिक आडंबर तथा धर्म के नाम पर निम्न वर्गों का शोषण सभी कुछ उसी प्रकार विद्यमान है। [10]"

बुल्ले शाह समाज के वर्णनकर्ता न होकर एक यथार्थवादी आलोचक हैं। वे समाज की रूढ़ियों का वर्णन नहीं सीधा उनका खंडन करते हैं। परवर्ती काल में समाज को सुधार की आवश्यकता हुई और पुराने मानदंड टूटने के कारण एक नए समाज का उदय हो रहा था, जिसमें क्रांतिकारी बुल्ले शाह समाज को मशाल दिखते हुए चलते है। रूढ़ि खंडन करते हुए उन्होंने केवल उस धर्म और संस्कृति की रूढ़ियो पर हमला नहीं किया जिसमें वे पले बड़े थे बल्कि उन्होंने अपने आस-पास के हिंदू और सिख समाज का भी उत्थान किया –

"फूक मुसल्ला भन्न सिट्ट लोटा,
ना फड़ तसबी कासा सोटा ,
आलिम कहंदा दे दे होका ,
तर्क हलालों खाह मुरदार।
इशक दी नवीओं नवी बहार" ।[11]"

समाज को नए मानदंड और तर्क प्रदान करते बुल्ले शाह हिंदू को लोटा तोड़ने को कहते हैं और मुसल्ले को फूकने को कहते हैं। बुल्ले शाह की भाषा की कटार सीधा सामाजिक रूढ़ि को जीर्णशीर्ण कर देती है। एक मुसलमान परिवेश से होकर इतना बड़ा विद्रोह करना हर किसी के बस की बात नहीं। जिस धर्म की कट्टरता के कारण सूफीयत का जन्म हुआ, उस धर्म की रूढ़ियों का खंडन बुल्ले बार-बार करते हैं। उनका मानना है कि ये रूढ़ि और परंपरा जिनसे खुदा के मिलने कि उम्मीद कि जाती है सब झूठ है।

"वेद कुराना पढ़-पढ़ थक्के ,
सिजदे कारदिआं घस गए मत्थे ,
ना रब्ब तीरथ ना रब्ब मक्के,"[12]

धार्मिक रूढ़ि का खंडन करते हुए बुल्ले ने कहा है कि सजदे करकर माथा घिसकर काला निशान बनाने-, हिंदू के तीरथ जाने, कुरान पढ़ने से रब्ब नहीं मिलेंगे क्युंकि यह सब रूढ़ि आडंबर बेकार है। बुल्ले का काव्य पढ़ कर आभास होता है कि धार्मिक रूढ़ि बुल्ले के समय कि सबसे जटिल समस्या रही है। वे स्वयं भी एक अलफ पढ़ कर छुटकारा पा लेते हैं और सारी रूढ़ि और परंपरा धरी रह जाती है –

""बण हाफ़ज हीफज कुरान करें,
पढ़ पढ़ के साफ ज़बान करें,
फिर नेआमता विच्च ध्यान करें,
मन फिरदा ज्यों हलकारा ए।
इक अलफ पढ़ो छुटकारा ए "[13] "

बुल्ले शाह मुस्लिम परिवेश से थे यही कारण रहा है कि वे मुसलमानी रूढ़ियों को पहचान कर उनका खंडन करते अधिक दिखाई देते है। सूफी साधना में प्रेम का महत्व है, और प्रेम में आडंबरों की गुंजाइश नहीं होती।

---

[10] 'अनु' ,रवि कुमार. *पंजाबी भाषा और साहित्य का इतिहास* .पृ॰92

[11] सिंह, नामवर. *बुल्ले शाह की काफियां* .पृ॰36.

[12] सिंह.नामवर , *बुल्ले शाह की काफियां* .पृ॰37.

[13] सिंह ,नामवर.. *बुल्ले शाह की काफियां* .पृ॰43.

भारतीय प्रेमाख्यानक परंपरा में मोहम्मद की वंदना महाकाव्य के शुरू में की जाती है, इस सूफी काव्यरूढ़ि को भी बुल्लेशाह तोड़ देते हैं। मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह के बीच एक युग का अंतर है, दरबार से सड़क पर आकार सूफी काव्य मस्ती ग्रहण करता है, उसकी शास्त्रीयता खत्म होना जरूरी है। शास्त्र नियम आधारित काव्य वर्णन के गुण रखता है, और समाज, रूढ़ि, परंपरा, सभी का वर्णन मात्र कर देता है। जबकि कुछ मुद्दों को मौलाना दाऊद ने उठाया है, जो उत्तर आधुनिक विमर्शों से ताल्लुक रखते है। परंतु बुल्ले शाह एक अद्वितीय हस्ती है। वे समाज में रहकर उसकी रूढ मान्यताओं को तोड़ते हैं। वे सच्चे यथार्थवादी आलोचक है। समाज को झाड़ना– डपटना उनके काव्य में निरंतर चलता रहता है। कुलजीत शैली जी ने भी कहा है-

"वह केवल एक आत्ममुग्ध रहस्यवादी ही नहीं , अपने समय का आलोचनात्मक यथार्थवादी भी है जो वर्ग चेतना से भी लैस है। [14]""

उनके सम्मान में कहे शब्द 'आलोचनात्मक यथार्थवादी' युक्ति संगत है परंतु वे यथार्थवादी आलोचक भी हैं, जो समाज की सच्ची आलोचना भी करते हैं और यथार्थ चित्रण भी करते हैं। परंतु दो कालों को मिलाने के चक्कर में आधुनिकता के आलोक में लिखा ग्रंथ चांदायन भी कुछ कम मूल्य नहीं रखता उसकी पहली खासियत तो उसका महाकाव्य होना ही है और इसके बाद वह समाज में स्त्री जीवन की रूढ़ियों को भी तोड़ता है। नारी से संबंधित नये प्रश्नों को उठा कर मौलाना दाऊद ने समाज में नारी जीवन और जाति से जुड़ी रूढ़ियों का चित्रण किया है और उन्हे खंडित करने का प्रयास भी किया है।

निष्कर्ष;

मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह ने अपने काव्य में तत्कालीन समाज में प्रचलित रूढ़ि और परंपराओं का चित्रण अपने काव्य में किया है। मौलाना दाऊद ने अपने काव्य में मुख्य रूप से भारतीय हिंदू समाज में प्रचलित रूढ़ि परंपराओं का चित्रण अपने काव्य में किया है। जन्म, विवाह, त्यौहार और उत्सवों आदि में प्रचलित रूढ़ि और परंपरा का चित्रण हमें मौलाना दाऊद के काव्य में देखने को मिलता है। बुल्ले शाह के काव्य में मुस्लिम और हिंदू दोनों समाज के धार्मिक और सामाजिक रूढ़ि और परंपराओं के दर्शन हमें होते हैं। रूढ़ि परंपरा का ही अपरिवर्तनीय और जड़ रूप है जो समाज में शोषण और असमानता का कारण बनकर प्रकट होता हैं, इसके विपरीत परंपरा नवीनता और परिवर्तन लेकर समाज में संस्कृति के स्तम्भ के रूप में प्रचलित रहती है।

संदर्भ ग्रंथ :

1 गुप्त, माताप्रसाद.(1967).चांदायन.आगरा:प्रामाणिक प्रकाशन.

2 सिंह, नामवर.(2003).बुल्ले शाह की काफियां.नई दिल्ली:अनामिका प्रकाशन.

3 दुबे, श्यामचरण.(2005).समय और संस्कृति.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

4 शर्मा, ज्ञानचंद्र.(1973).चंदायन का सांस्कृतिक परिवेश.पटियाला:विशाल प्रकाशन.

5 'अनु', रवि कुमार.(2003).पंजाबी भाषा और साहित्य का इतिहास.दिल्ली:शिवहरी प्रकाशन

[14] सिंह ,नामवर..*बुल्ले शाह की काफियां*.पृ॰10.